॥ श्री श्याम चौरासी ॥

दोहा:

गुरुपद पंकज ध्यान घर, सुमिर सच्चिदानंद।
श्याम चौरासी भनत हूँ, रच चौपाई छन्द।

चौपाई:

महर करो जन के सुखरासी, सांवलशा: खाटू के वासी।
प्रथम शीश चरणों में नाव, किरपा दृष्टि रावरी चाँव।
माफ सभी अपराध कराऊँ, आदि कथा सुछन्द रच गाऊँ।
भक्त सुजन सुनकर हरषासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

कुरु पाण्डव में विरोध छाया, समर महाभारत रचवाया।
बली एक बरबरीक आया, तीन सुबाण पास में लाया।
यह लखि हरि को आई हासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

मधुर बचन तब कृष्ण सुनाये, समरभूमि केहि कारण आये।
तीन बाण धनु कंध सुहाये, अजब अनोखा रूप बनाये।
बाण अपार वीर सब ल्यासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बरबरीक इतने दल माहीं, तीन बाण की गिनती नाहीं।
योद्धा एक से एक निराले, वीर बहादुर अति मतवाले।
समर सभी मिल कठिन मचासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बरबरीक मम कहना मानो, समर भूमि तुम खेल न जानो।
द्रोण गुरु कृप आदि जुझारा, जिनसे पार्थ का मन हारा।
तू क्या पेश इन्हीं से पासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बरबरीक हरी से यों कहता, समर देखना मैं हूँ चाहता।
कौन बली रण शूर निहारू, वीर बहादुर कौन जुझारू।
तीन लोक एक बाण से मारू, हँसता रहूँ कभी न हारू।
सत्य कहूँ हरी झूठ न जानो, दोनों दल एक तरफ हो मानो।
एक बाण दल दोनों खपासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बरबरीक से हरी फरमावें, तेरी बात समझ नहीं आवे।

प्राण बचाओ तुम घर जावो, क्यों नादानपन दिखलाओ।
तेरी जान मुफ्त में जासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

गर विश्वास न तुम्हें मुरारी, तो कर लीजे जांच हमारी।
यह सुन कृष्ण बहुत हरषाये, बरबरीक से वचन सुनाये।
में अब लेऊ परीक्षा खासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

पात विटप के सभी निहारो, वेध एक शर से सब डारो।
कह इतना इक पात मुरारी, दबा लिया पग तले करारी।
अजब रची माया अविनाशी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बरबरीक धनुं बाण चढ़ाया, जानी जाय न हरी की माया।
बिटप निहार बली मुस्काया, अजित अमर अहिलवती जाया।
बली सुमिर शिव बाण चलासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बाण बली ने अजब चलाया, पते वेध विटप के आया।
गिरा कृष्ण के चरणों माहीं, विधा पात हरी चरण हटाई।
इनसे कौन फते किमि पासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

कृष्ण कहे बली बताओ, किस दलकी तुम जीत कराओ।
बली हार का दल बतलाया, यह सुन कृष्ण सनाका खाया।
विजय किस तरह पार्थ पासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

छल करना कृष्ण ने विचारा, बली से बोले नन्द कुमारा।
ना जाने क्या जान तुम्हारा, कहना मानो बली हमारा।
हो निज तरफ नाम पा जासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

कहे बरबरीक कृष्ण हमारा, टूट न सकता प्रण है करारा।
मांगे दान उसे मैं देता, हारा देख सहारा देता।
सत्य कहूँ ना झूठ जरासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बेशक वीर बहादुर तुम हो, जचते दानी हमें न तुम हो।
कहे बरबरीक हरी बतलाओ, तुमको चाहिए क्या फरमाओ।
जो मांगे सो हमसे पासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

बली अगर तुम सच्चे दानी, तो मैं तुमसे कहूँ बखानी।
समर भूमि बली देने खातिर, शीश चाहिए एक बहादुर।
शीश दान दे नाम कमासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

हम तुम अर्जुन तीनों माहीं, शीश दान दे को बलदाई।
जिसको आप योग्य बताये, वही शीश बलिदान चढ़ाये।
आवागमन मिटे चौरासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

अर्जुन नाम समर में पावे, तुम बिन सारथि कौन कहावे।
मम शिर दान दिहों भगवाना, भारत देखन मन ललचाना।
शीश शिखर गिरि पर धरवासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

श दान बरबरीक दिया है, हरि ने गिरि पर धरा दिया है।
समर अठारह रोज हुआ है, कुरु दल सारा नाश हुआ है।
विजय पताका पांडू फै रासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

भीम, नकुल, सहदेव और पार्थ, करते निज तारीफ अकारथ।
यों सोचें मन में यदुराया, इनके दिल अभिमान है छाया।
हरि भक्तों का दुःख मिटासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

पार्थ भीम आदि बलधारी, से यो बोले गिरिवरधारी।
किसने विजय समर में पाई, पूछो सिर बरबरीक से भाई।
सत्य बात सिर सभी बतासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

हरि सबको संग ले गिरिवर पर, सिर बैठा था मगन शिखर पर।
जा पहुंचे झटपट नन्दलाला, पुनि पूछा सिर से सब हाल।
शीश दानी हैं खुद अविनाशी, सांवलशा: खाटू के वासी।

हरि यों कहे सही फरमाओ, समरजीत है कौन बताओ।
बली कहे मैं सही बताऊ, नहीं पितु चाचा बली न ताऊ।
भगवत्त ने पाई स्याबासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

चक्र सुदर्शन है बलदाई, काट रहा था दल जिमी काई।
रुप द्रौपदी काली का धर, हो विकराल ले कर मैं खप्पर।

भर भर रुधिर पिये थी प्यासी, सांवलशा: खाटू के वासी।
मैने जो कुछ समर निहारा, सत्य सुनाया हाल है सारा।
सत्य बचन सुनकर यदुराई, वर दीन्हा सिर को हर्षाई।
श्याम रूप मम धर पुजासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

कलि में तुम श्याम कन्हाई, पुर्जेगे सब लोग लुगाई।
मन कर्म बचन जो ध्यार्येगे, मन इच्छा फल पायेंगे।
'निम्बू' सदगति को पा जासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

भक्तों को धनवान बनाना, पत्नि गोद में सुवन खिलाना।
'बनबारी' है शरण तिहारी, श्रीपति यदुपति कुञ्जबिहारी।
सब सुखदायक आनंद रासी, सांवलशा: खाटू के वासी।

दोहा:

श्याम चौरासी है रची, भक्त जनन के हेत।
जो यह निशि वासर पढ़े, सफल सुमंगल देत।
लख चौरासी छुटिये, श्याम चौरासी गाय।
अक्षय चार फल पाय कर, आवागमन मिटाय।
सागर उपनाम है, कहे सब लादुराम।
सात्विक भक्त जग में जिते, उनको करूं प्रणाम।
शुक्लपक्ष ग्रह ग्रहशशी, पित्र पक्ष शुभ जान।
चन्द्रमा एकादशी कियो, पूर्ण गुण गान।।